सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभावः

समस्तीपुर जिला पर आधारित एक समाजशास्त्री अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

की

पीएच0डी0 समाजशास्त्र उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रस्ताव

सत्र :– 2021–2022

शोध निर्देशक :–

प्रो0 मो0 शाहिद हसन

विभागाध्यक्ष

विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर दरभंगा–846004

शोध–छात्र :–

अबलेश साह

पी0एचडी0 शोधार्थी

विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर दरभंगा–846004

विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

समाजिक विज्ञान संकाय

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर दरभंगा–846004

PAT रोल नं0 :–E2219001

वर्ग कमांक :– 11

Ablesh Sah
09/02/24

शोध–शीर्षक

''सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव''

(समस्तीपुर जिला पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

शोध–प्रस्ताव

विश्वविद्यालय समाजभाास्त्र विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध अन्वेषकः

नाम–अबलेश साह

पैट रौल नं0–E22190001

2021-2022

Ablesh Sah
29/12/24

Scanned with OKEN Scanner

शोध–शोर्षक

''सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव''

(समस्तीपुर जिला पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

भूमिका

मीडिया संचार का वह माध्यम है जिसकी लोगों तक व्यापक पहुँच व प्रभाव है। लोकतान्त्रिक देशों में मीडिया को चौथा स्तम्भ माना जाता है। संचार साधनों के विकास की वजह से ''ग्लोबल विलेज'' की अवधारणा को बढ़ावा मिला है। सोशल मीडिया शब्द एक कम्प्यूटर आधारित तकनीक को संदर्भित करता है। जो आभासी नेटवर्क और समुदायों के माध्यम से विचारों और सूचनाओं को साझा करने की सुविधा प्रदान करता है। सोशल मीडिया ने युवा पीढ़ी को साकारात्मक और नाकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित किया है। एक संतुलित जीवन, परिवार, समाज, संस्कृति और देश के लिए सोशल मीडिया के दोनों पक्षों पर हमें खुले मन से विचार करना चाहिए।

21वीं सदी के लोगों के बीच सोशल मीडिया का उपयोंग रोजमर्रा की जिन्दगी एक अभिन्न अंग है। यह किसी एक विशेष आयु वर्ग के लोगों से संबंधित नहीं है। किशोर, युवा एवं बूढ़े हर कोई सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है। सोशल मीडिया का उपयोग विभिन्न प्रकार के वेब आधारित प्लेटफार्म एप्लिकेशन और प्रौद्योगिकियों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। आज पूरी दुनिया के युवा पीढ़ी सोशल मीडिया पर निर्भर है, यह निर्भरता एक लत बनती जा रही है। किसी भी चीज का अति प्रयोग प्रतिकूल प्रभाव डालता है। लेकिन आभासी दुनिया का आकर्षण इसके नाकरात्मक प्रभाव से कहीं अधिक है। युवा आभासी दुनिया में अधिक समय बिता रहे है।

Akhlesh Sah
29/02/24

Scanned with OKEN Scanner

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे–फेसबुक, टि्विटर, यू–ट्यूब आदि ऐसे अन्य ही अन्य साइटों पर इस्तेमाल कर्त्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स इमेज–ऑडियो और विडियों रूपों में जानकारी में हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की सुविधा प्रदान करता है। आज का दौर युवा शक्ति का दौर है। भारत में इस समय 65 प्रतिशत के करीब युवा है। इन युवाओं को बड़ी ही सक्रियता से जोड़ने का कार्य सोशल मीडिया कर रहा है। युवा वर्ग में सोशल नेटवर्किंग साइट का क्रेज दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। युवाओं के इसी क्रेज के कारण आज सोशल नेटर्वकिंग दुनिया भर में इंटरनेट पर होने वाली नंबर वन गतिविधि बन गया है। इस तरह सोशल मीडिया युवाओं की जिन्दगी का एक अहम हिस्सा बन गया है।

युवाओं के जीवन में सोशल मीडिया ने क्रांतिकारी परिवर्त्तन लाया है। "इंटरनेट एण्ड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया" द्वारा जारी ऑकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत में शहरी इलाकों में प्रत्येक चार मे से तीन व्यक्ति सोशल मीडिया का किसी न किसी रूप में प्रयोग करता है। इसी रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों के ऑकड़ों के आधार पर यह भी बताया गया है कि 77 प्रतिशत उपयोगकर्त्ता सोशल मीडिया का इस्तेमाल मोबाइल से करते है। भारत में 25 साल से अधिक आयु की आबादी 50 प्रतिशत और 35 साल से कम आयु की 65 प्रतिशत है जो सोशल मीडिया से किसी ना किसी तरह जुड़ा रहता है। यह ऑकड़ा बताता है कि भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन करीब 30 मिनट समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जा रहा है। इसमें अधिकतम कॉलेज जाने वाले विद्यार्थी (82प्रतिशत) और युवा (89 प्रतिशत) पीढ़ी के लोग शामिल है।

सोशल मीडिया युवाओं को सकारात्मक और नाकारात्मक दोनों रूपों से प्रभावित कर रहा है। एक तरफ जहाँ यह उपयोगी सिद्ध होता है। वहीं दूसरी तरफ इसके कई दुष्परिणाम भी काफी घातक सिद्ध होते है। साकारात्मक पक्षों को देखा जाए तो सोशल मीडिया एक ज्ञान का

Akhilesh Sah
29/02/24

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

भंडार है। यह युवाओं को उनके आत्म विश्वास और रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करता है। यह युवाओं को विचारो की ओर संभावनाओं की दुनिया से जोड़ता है। ये मंच छात्रों को अपने मित्रों और अपने सामान्य दर्शकों के साथ जुड़ने के मामले में रचनात्मक कौशल का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते है। सोशल नेटवर्क प्रेरणा (per motivation) का सृजन कर सकते है और युवाओं को नई एवं स्वस्थ्य आदतें विकसीत करने के लिए प्रेरित करती है। शोधकर्त्ता " सोशल मीडिया का उपयोग प्रायः डेटा एकत्र करने के लिए भी कर सकते है। जो उनके अनुसंधान में योगदान करता है। सोशल मिडिया मंच युवाओं को अपनेपन और स्वीकृति की एक भावना प्रदान करता है। कोरोना महामारी के दौरान इसका चौतरफा प्रभाव स्पष्ट तौर पर नजर आया जब इसने आइसोलन में रह रहे लोगो और प्रियजनों की आपस में जोड़े रखा। सोशल मीडिया समुदाय के अंदर प्रभाव उत्पन्न करने का माध्यम बन सकता है। यह उन्हें न केवल अपने समुदाय के अंदर बल्कि पूरे विश्व में आवश्यक विषयों से अवगत करता है।

यदि हम सोशल मीडिया का युवाओं पर नाकारात्मक प्रभाव की बात करे तो आज के दौर में प्रत्येक हाथ में सस्ते मोबाइल फोन की उपलब्धता से आज सोशल मीडिया उसके जीवन में इतना पैठ कर चुका है कि उसे अपने आस–पास के वातावरण की चीजे दिखाई ही हीं नहीं देती। सोशल मीडिया के माध्यम से अश्लीलता खुली दोस्ती और अनजानी दोस्ती का सबसे बुरा असर युवाओं के मन और शरीर पर देखा जा रहा है। हिंसा, ठगी, क्रुरता और भ्रष्टाचार के नए चेहरे भी आए इसने नई पीढ़ी को बहुत संकुलित और स्वार्थी बना दिया है। सोशल मीडिया ने नई पीढ़ी को हर स्तर पर प्रभावित किया है सिर्फ दिन ही नही रात भी सोशल मीड़िया के नाम हो गई है। युवाओं में अनियंत्रित सोशल मीडिया के उपयोग से इंटरनेट की लत लग जाती है। इंटरनेट के माध्यम से तरह–तरह के काले धंधे प्रारंभ हो रहे हैं। प्रोफेसर **इंदर सिन्हा** अपनी पुस्तक **"साइबर जिपसीसः ए ट्रू टेल ऑफ लस्ट वार एण्ड ब्रिट्रैल ऑन द इलेक्ट्रॉनिक फंटियर"** में

साइबर की जाल साज दुनिया की परत भंडाफोड़ है। उन्होने यह भी बताया परिवारों को जोड़ने की बजाय उन्हें तोड़ने का कारण बन रहा है। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के परिणाम स्परूप स्वास्थ्यप्रद वास्तविक दुनिया की गतिविधियों पर कम समय व्यतीत किया जाता है। सोशल मीडिया फीड्स को स्कॉल करते रहने की आदत जिसे वैम्पिंग कहा जाता है के कारण नींद्र की कमी की समस्या उत्पन्न होती है। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से युवा डिप्रेशन का भी शिकार होते जा रहा है।

अध्ययन की समस्याः–

प्रस्तुत शोध कार्य सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव पर केन्द्रित है। यह एक जटिल एवं व्यापक क्षेत्र का विषय है। हर चार में से एक युवा के पास एक दिन में 2–3 घंटे से अधिक समय तक इंटरनेट की सुविधा है। 73 प्रतिशत युवा इंटरनेट का उपयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में सोशल मीडिया का युवाओं पर नाकारात्मक और साकारात्मक दोनों रूपों से प्रभाव पड़ता है इस शोध के दौरान युवाओं पर पड़ने वाले दोनो पहलु के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा। जो कि प्रस्तुत शोध की प्रमुख समस्या है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

प्रस्तावित शोध "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव" के संदर्भ में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया हैः–

1) समस्तीपुर के युवाओं में सोशल मीडिया उपयोग के पैटर्न को समझना।

2) युवा के सोशल रिश्तों और व्यक्तिगत कौशल पर मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

3) युवाओं के शिक्षा एवं मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

Akhlesh Sah
22/08/24

Scanned with OKEN Scanner

4) युवा के बीच सकारात्मक सोशल मीडिया उपयोग को बढ़ावा देने के लिए उपाय प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न:–

1) समस्तीपुर के युवा के बीच सोशल मीडिया उपयोग के पैटर्न क्या है जैसे उसकी आवृत्ति, अवधि और गतिविधियों के प्रकार ।

2) आयु, लिंग और आर्थिक स्थिति जैसे जनसांख्यकीय कारक कैसे सोशल मीडिया उपयोग के पैटर्न को प्रभावित करते है।

3) सोशल मीडिया कैसे युवा के बीच आत्मनिर्भरता, रख–रखाव और आत्मगुण संबंधों पर प्रभाव डालता है।

4) क्या सोशल मीडिया के कारण परंपरागत प्रथाओं में कोई परिवर्तन आया?

5) सोशल मीडिया उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य के परिणामों के बीच क्या संबंध है?

6) पहचाने गए चुनौतियों के आधार पर युवा के बीच नैतिक सोशल मीडिया व्यवहार को कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है?

7) क्या सोशल मीडिया युवाओं के शिक्षा को प्रभावित करते है?

साहित्य समीक्षा:–

साहित्य का पुनरावलोकन किसी भी प्रकार के शोध का एक महत्वपूर्ण भाग होता है, क्योंकि यह शोध करने वाले कार्य की दिशा प्रदान करता है और शोधकर्त्ता को विषय से संबंधित तथ्यों को गहराई से अध्ययन करने में मदद करता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव से संबंधित पूर्व अध्ययनो को व्यवस्थित किया गया है।

Akhlesh Sah
25/09/24

Scanned with OKEN Scanner

1) **गबनर सिद्दीकी और तजिंदर सिंह (2016)** ''सोशल मीडिया का नाकारात्मक एवं साकारात्मक पहलुओं पर प्रभाव'' पर अध्ययन किया। इन्होने शिक्षा, व्यवसाय, समाज, युवाओं आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि जैसे–जैसे तकनीकी बढ़ रही है, सोशल मीडिया प्रत्येक व्यक्ति के लिए दिनचर्या बन गया है। ये तकनीक हर दिन व्यवसाय को विभिन्न तरीकों से किसी संगठन के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते है। सोशल मीडिया के कई गुण है लेकिन इसके कुछ अवगुण भी है जो लोगों को नाकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। गलत जानकारी शिक्षा प्रणाली को विफलता की ओर ले जा रही है। सोशल मीडिया लोगों की गोपनीयता पर हमला करके समाज का दुरूपयोग कर रहा है। इनका मुख्य निष्कर्ष यह रहा है कि सोशल मीडिया का उपयोग फायदेमंद है लेकिन इसका बिना लत के सीमित तरीके से किया जाना चाहिए।

2) **शेट्टी, रेशमा और हैदर (2015)** ''युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव''। इन्होंने अपने शोध में मुख्य रूप से विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइटों के उपयोग के जागरूकता स्तर को समझना तथा सोशल मीडिया से प्राप्त जानकारी पर विश्वास के स्तर की खोज करना था।

इन्होने अध्ययन हेतु 100 उत्तरदाताओं का चयन किया तथा सोशल मीडिया के प्रभाव के संबंध में विभिन्न पहलुओं पर प्रश्न किया तथा अंत में पाया कि यदि सोशल मीडिया का उपयोग साकारात्मक तरीके से किया जाए तो युवाओं के कैरियर, कौशल, जीवन शैली आदि का विकास होगा।

3) **डॉ पुजा देशमुख (2015)** ''युवाओं पर सोशल नेटवकिंग साइटों के प्रभाव'' का अध्ययन किया। उनका उद्देश्य विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइटों के उपयोंग के जागरूकता स्तर को समझना, सोशल नेटवर्किंग साइटों के प्रकार का अध्ययन करना था। युवाओं पर सोशल नेटवर्किंग साइटों के प्रभाव को जानना। उनका निष्कर्ष था कि सोशल नेटवर्किंग

Abhilesh Sah
29/02/24

Scanned with OKEN Scanner

साइटों युवाओं के बीच बहुत लोकप्रिय है और उनमें से अधिकांश युवा नेटवर्क साइट के सक्रिय सदस्य पाये गयें।

4) राम शंकर (2013) ''अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच सोशल मीडिया : चुनौतियों एवं संभावनाएँ'' इस शोध में शोधार्थी ने अध्ययन कर पाया कि सोशल मीडिया की तरफ लोगों की रूझान तेजी से बढ़ रहा है। सोशल मीडिया के जरिये नए रोजगार का सृजन हो रहा है। संवाद के साथ ही सृजन का भी मंच उपलब्ध कर रहा है।

5) गुलाम सब्बीर (2019) ''सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव'' इन्होनें अपने शोध के दौरान निष्कर्ष मे पाया कि सोशल मीडिया से क्राइम अपराधों में वृद्धि हो रहा है इन क्राइम अपराध में अधिकांश युवा शामिल होते हैं। जिसका दुष्परिणाम प्रत्यक्ष रूप से हमारे समाज पर पर हो रहा है तथा कई युवा विचलित हो रहे हैं।

शोध पद्धतिशास्त्रः–

समाजिक अनुसंधान मे तथ्य संकलन के लिए पद्धतियों का उपयोग शोध को महत्वूपर्ण एवं वैज्ञानिक रूप प्रदान करता है। इसमें शोध प्रश्न की पहचान करना, एक शोध डिजाइन का चयन करना, डाटा एकत्रित करना और उनका विश्लेषण करना तथा निष्कर्ष निकालना शामिल है। प्रस्तुत शोध का प्रारूप वर्णात्मक शोध–प्रारूप पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत अध्ययन ''सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव'' से संबंधित है। हमने अध्ययन क्षेत्र के रूप में समस्तीपुर जिला के सिंघिया प्रखण्ड का चयन किया है। सिंघिया प्रखण्ड के समस्तीपुर के उत्तरी छोड़ पर स्थित है। इसमें कुल गॉवो की संख्या 44 है तथा 2011 की जनगणना के अुनसार इसकी कुल आबादी 31,952 है। जनसंख्या में

Abhishek Sah
28/02/24

Scanned with OKEN Scanner

पुरूष 52.62 प्रतिशत और महिला 47.38 प्रतिशत है। लिंग आधारित साक्षरता की दृष्टि से पुरूषों का प्रतिशत 51.11 तथा महिला का प्रतिशत 32.95 है।

तथ्य संकलनः—

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतो का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्त्रोत का प्राविधिक आधार साक्षात्कार, अनुसूची व अवलोकन का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीयक स्त्रोत के अंतर्गत सरकारी प्रलेख और सांख्यकी, इंटरनेट, उपलब्ध प्रलेखन सामग्री, पत्र—पत्रिका एवं पूर्व के शोध का प्रयोग किया जायेगा।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन व विश्लेशणः—

तथ्यों से अर्थपूर्ण व संबंध का आकलन करने हेतु तथ्यों को समजातीय समूहों में वर्गीकरण के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा। तथ्यों का वर्गीकरण सम्पूर्णता की प्रकृति के अनुसार दो प्रकार से हो सकता है—गुणों के अनुसार वर्गीकरण व समान्य अभिलक्ष्णों के आधार पर समंकों का वर्णात्मक रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है।

अध्ययन का समग्र व निदर्शन चयनः—

सुविधाजनक निदर्शन के द्वारा समस्तीपुर जिला के सिंघिया प्रखण्ड का चयन किया गया है। सुविधाजनक निदर्शन एक ऐसी विधि हैं जिसमें अनुसंधानकर्त्ता को सुविधा से अध्ययन के लिए ईकाईयां उपलब्ध हो जाती हैं। सिंघिया प्रखंड के कुल 94 गॉव है जिनमें शोध हेतु 10 गॉव में से सुविधाजनक निदर्शन विधि के द्वारा 30—30 उत्तदाताओं का चयन किया जायेगा। इस प्रकार 10 गॉव से कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया जायेंगा व चयनित 300 उत्तरदाताओं के ऊपर सम्पूर्ण सर्वेक्षण संचालित किया जायेगा और साक्षात्कार अनुसूची

Abhesh Sah
8/10/24

Scanned with OKEN Scanner

के माध्यम से उनसे अध्ययन से संबंधित प्रश्नों पर तथ्य के रूप में इनकी प्रतिक्रियाएँ संकलित की जायेगी।

शोध कार्य हेतु उपयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध कार्य सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव से संबंधित है। इस शोंधकार्य हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जाना है। अतः साक्षात्कार अनुसूची इस शोधकार्य में प्रयुक्त होने वाला प्रथम उपकरण होगा। द्वितीय शोधकार्य से जुड़े कैमरा, मोबाइल, लैपटॉप जैसे उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

नैतिक प्रतिपूर्तिः–

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन उत्तरदाताओं की पूर्व सहमति के पश्चात् किया जायेगा। उत्तरदाताओं के साथ ऐसी कोई गतिविधियाँ नहीं की जायेगी जिससे उनके सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियों को ठेंस पहुँचे व उत्तरदाताओं की किसी भी सूचना का प्रयोग नीजी लाभ के लिए नही किया जायेगा।

समाजशास्त्र एवं अन्य अनुसंधानो के संदर्भ में वर्तमान शोध का योगदानः–

सोशल मीडिया मूल रूप से कंप्यूटर या किसी भी मानव संचार या जानकारी के आदान–प्रदान करने से जुड़ा हुआ है जो कंप्यूटर, टेबलेट या मोबाइल के माध्यम से प्राप्त की जाती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया अब संचार का सबसे बड़ा माध्यम बन रहा है और तेजी से लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है सोशल मीडिया के प्रयोग से हमारा समाज सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित हो रहा है एक तरफ सोशल मीडिया हमारे जीवन को सुलभ बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही है तो दूसरी तरफ इसके दुष्परिणाम भी हमारे समाज में उत्पन्न हो रही है। वर्तमान समय में अधिकांश युवा सोशल मीडिया का आदि हो चुका है जिसका प्रभाव हमारे समाज में प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है आज के समय में स्मार्टफोन लगभग हर दूसरे

Akhilesh Singh
20/02/24

Scanned with OKEN Scanner

व्यक्ति के पास है और व्यक्ति सोशल मीडिया पर एक्टिव रहता है आज व्यक्ति दैनिक जरूरी काम करना भूल सकता है लेकिन सोशल मीडिया पर चल रही गतिविधियों को देखना नहीं भूलता है।

कार्य–प्ररचनाः–

प्रस्तुत शोध कार्य के तात्कालिक अध्याय निम्नलिखित होंगेः

1.भूमिका।

2.उपलब्ध साहित्य का सिंहावलोकन।

3.अध्ययन क्षेत्र।

4.शोध पद्धतिशास्त्र।

5.उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।

6.सोशल मीडिया का पर्सनल रिलेशनशिप और समुदायिक गतिविधियों पर प्रभाव का अध्ययन।

7.सोशल मीडिया का युवाओं पर सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का अध्ययन।

8.सोशल मीडिया का युवाओं के पर शिक्षा प्रभाव का अध्ययन।

9.सारांश एवं निष्कर्ष

10.सुझाव

परिशिष्टः 1. संदर्भ ग्रंथ

2. साक्षात्कार सूची

Alnash Sah
20/02/24

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ ग्रंथः

1 Siddqui S & singh (volume 5-issues to) Social media its impact with positive and negative aspects. international journal of computer application technology.

2 Shetty, Reshma and Hadair (oct 2015) The impact of Social media on youth. international journal of innovative research in computer and communication engineering.

3 Dr. Pooja Deshmukh (volume-5, issue 12,dec 2014) An impact of Social networking sites on youngster.international journal of management.

4 शंकर, गौरी एवं माटे, सुरेशचंद्र (1983): सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी स्टूडेंटस फ्रेंण्ड्स एंड कंपनी, हिंदू विश्वविद्यालय मार्ग, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

5 आहूजा, राम (2003): सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002, भारत।

6 राम, शांकर, अंक दिसम्बर 2013, शाोध आलेख–अभिव्यक्ति का वैकल्पिक मंच सोशल मीडियाः चुनौतियां एवं संभावनाएं।

7 सिंह, गोपी रमण प्रसाद (2013–2014) सामाजिक अनुसंधान एवं सामाजिक सर्वेक्षण, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस आगरा–2, उत्तर प्रदेश, भारत।

8 sabbir, gulam(2014) The impact of social media or youth, Department of media studies, The Islamia. University of Bahawalpur.

9 https://www.census2011.co.in

Scanned with OKEN Scanner

10 https://www.1hindi.com/impact-of-social-media-on-society- in- hindi/

11 https://www.samastipur.nic.in